संस्थागत भ्रष्टाचार के ख़तरे

आजकल एनसीआरटी की आठवीं कक्षा की एक किताब में कथित न्यायिक भ्रष्टाचार को लेकर एक चैप्टर रखने पर सुप्रीम कोर्ट ख़फ़ा है और माफ़ी भी नहीं दे रहा है।

बात तो गंभीर है और सार्वजनिक रूप से यह बात नहीं लिखी जानी चाहिए और विशेष तौर पर बच्चों के दिमाग में तो न्यायपालिका की ऐसी छवि कतई नहीं बैठानी चाहिए।

मूल सवाल यह है कि यह चैप्टर आया कैसे ? असावधानी से तो नहीं आया होगा। न्यायपालिका को मलिन करने का माहौल बहुत पहले से ही नरेंद्र मोदी सरकार के मंत्री और सांसद बनाते आये हैं। पहले के कानून मंत्री रवि शंकर प्रसाद , फ़िर किरण रिजेजू न्यायपालिका और कोलिजियम सिस्टम के विरुद्ध बयां देते रहे। इनके एक सांसद ने तो मुख्य न्यायाधीश खन्ना पर देश को आग में झोंकने का ही इल्जाम लगा दिया था।

दूसरी बात यह है कि नरेंद्र मोदी ने अपने आसपास अयोग्य मंत्रियों की फ़ौज जमा कर रखी है जो सरकार को और पार्टी को गाहे-बगाहे शर्मिंदा करते रहे हैं। वाणिज्य मंत्री गोयल ने अमरीकी ट्रेड डील में भद पिटवाई, तकनीकी मंत्री वैष्णव ने अभी एआई समिट में गलगोटिया प्रकरण में देश की हंसी उड़वाई, हरदीप पुरी ने एपस्टिन फाइल मामले में सरकार को शर्मिन्दा किया और शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने तो पहले यूजीसी प्रकरण में और अब एनसीआरटी बुक प्रकरण में केंद्रीय सरकार को कहीं का नहीं छोड़ा।?

अब लौटते हैं मूल मुद्दे की तरफ़। भारत की न्यायपालिका में भ्रष्टाचार कोई ढ़की छुपी बात नहीं है। यहां भी ठीक वैसे ही है जैसे और सरकारी संस्थानों और कार्यालयों में होता है। निचली न्यायालय में रीडर के रिश्वत लेने से लेकर सर्वोच्च न्यायालय में रजिस्ट्री में बैंच हीटिंग तक। स्वयं सर्वोच्च न्यायालय के तत्कालीन चार वरिष्ठतम न्यायाधीश एक प्रेस कांफ्रेंस में रजिस्ट्री पर और सलक्टिव बैंच अलाटमेंट पर सवाल उठा चुके हैं। अभी कल का ही मामला है जहां सर्वोच्च न्यायालय की रजिस्ट्री ने एक ऐसे मामले को चुपचाप से एक अन्य बैंच में लगा दिया जबकि उसी मामले को सर्वोच्च न्यायालय की एक तीन सदस्यीय बैंच पहले ही खारिज़ कर चुकी थी। यह भी आरोप लगते रहे हैं कि जिन मामलों में सरकार अपने पक्ष में निर्णय चाहती है या फ़िर अपने राजनीतिक विरोधियों को जमानत का लाभ नहीं देना चाहती उन मामलों को मैनेज करके किसी खास न्यायाधीश की बैंच के पास भिजवा दिया जाता है। वरिष्ठ वक्कील प्रशांत भूषण ने भी ज्युडिशियरी पर अनेक आरोप लगाये थे।

किसी भी देश में न्यायिक भ्रष्टाचार का मतलब केवल रिश्वत में पैसा लेना नहीं होता। इसके और भी अनेक रूप होते हैं। किसी को फ़ायदा पहुंचाने के लिए उससे संबंधित केस को किसी खास बैंच को भेजना, सरकारी वकील या सोलीसीटर जनरल की इच्छा अनुसार मुकदमे को आगे बढ़ाना या सुनने से मना कर देना, कारपोरेट के मुकदमों को प्राथमिकता से सुनना और उन्हें तत्काल राहत देना, सत्तारूढ़ दल से संबंधित लोगों को राहत और सत्ता विरोधी लोगों को जेल वाला फार्मूला रखना आदि से संबंधित प्रकरण यदि होते हैं तो हम कह सकते हैं कि ये न्यायिक भ्रष्टाचार की श्रेणी में आते हैं। हमें भूलना नहीं चाहिए कि हमारे पड़ोस में ही पाकिस्तान और बंगलादेश की न्यायपालिका को इन्हीं आरोपों के कारण अक्सर जनविरोध का सामना करना पड़ा है।

हमारे भारत में भी अभी उच्च न्यायालय के एक न्यायाधीश के निवास से भारी मात्रा में नकदी बरामद हुई थी जिसकी जिम्मेदारी आज तक तय नहीं की जा सकी है। बहुत से न्यायाधीश नौकरी से निवृत्त होने के बाद तत्काल सरकार द्वारा प्रदत्त किसी लाभ के पद पर विराजमान हो जाते हैं या सत्तारूढ़ दल के टिकट पर चुनाव लड़ लेते हैं। किसी भी न्यायपालिका के लिए वो दिन दुखदायक होता है जब किसी केस के निर्णय के बारे में अनुभवी वकील उसे सुनने वाले जज को देखकर ही भविष्यवाणी कर देते हैं।

तो भ्रष्टाचार के अनेक रूप होने के बाद भी यह कहा जा सकता है कि भारत की न्यायपालिका अभी भी अपेक्षाकृत साफ़ सुथरी है और न्यायाधीश मोटे तौर पर ईमानदार तथा निष्पक्ष। जस्टिस भरूचा ने एक बार कहा था कि 'भारत के 80 प्रतिशत से भी ज्यादा न्यायाधीश बेहद ईमानदार हैं' । यही ताकत है जो हमारे लोकतंत्र को जीवित रखे हुए है।

अरविंद 'कुमारसंभव'

ग़ज़ल सम्राट श्री पंकज उधास जी

30 अगस्त 1986 को को जब अभिनेता संजय दत्त और कुमार गौरव अभिनीत फिल्म 'नाम ' रिलीज़ हुई तब मैं 9 वर्षीय कक्षा 6 का विद्यार्थी था। उस वक्त वी सी आर लगा कर मोहल्ले में फिल्म देखने का बड़ा क्रेज हुआ करता था। मुझे आज भी याद है जब मेरे मोहल्ले में उस समय के शिक्षक स्व श्री अवधेश साहनी (मास्टर) के घर पर मैंने यह फ़िल्म देखी। उम्र के लिहाज़ से उस समय मेरी उम्र के सभी बच्चें मारधाड़ की फिल्में ज्यादा पसंद करते थे। इस फ़िल्म में ज्यादा मार धाड़ नहीं थी। फिल्म में श्री पंकज उधास जी की आवाज़ में उन्हीं पर फिल्माई गज़ल 'चिट्ठी आई है, वतन से चिट्ठी आई है.....' उस वक्त हर एक के जुबान पर थी।

जमाना भी पोस्टकार्ड, अंतर्देशी पत्रों का था।यह गज़ल तब से लेकर आज मोबाइल और मेल के ज़माने में भी हर एक संगीत और गज़ल प्रेमी की पसंद है।उस वक्त बचपन में कभी सोचा न था कि इस महान शख्सियत से कभी मुलाकात भी होगी।जुलाई,2013 में अकोला (महाराष्ट्र) में लायंस क्लब के एक आयोजन मुझे एक मित्र के साथ जाने का मौका मिला। वहां मेरे मित्र के मामा जी श्री कौशल भाटिया जी से पहली बार मुलाक़ात हुई ।(चित्र में मेरे साथ) पता चला कि पंकज उधास जी और कौशल भाटिया जी अभिन्न मित्र है।पंकज उधास जी का नाम कौशल जी के मुख से सुनकर 1986 की फिल्म की वही गज़ल 'चिट्ठी आई है ..... दिल और दिमाग पर फिर से पूरी तरह हावी हो गई।उसके बाद बात लगभग आई गई सी हो गई।कुछ वर्ष पूर्व पंकज उधास जी का हमारे शहर में महाशिव रात्रि पर्व पर आयोजित एक संगीत समारोह में आना हुआ।उत्सकुता वश मेरा भी उनसे मिलना हो ही गया। सलीके से सजे उनके बाल, प्यारी सी मुस्कान और धीमी आवाज़ में बात करने का अंदाज़ कायल कर गया। अपनी मुलाकात में जब मैंने उन्हें अकोला के उनके और मेरे मित्र श्री कौशल भाटिया का जिक्र किया।अपने अभिन्न मित्र का मुझसे एक नए शहर में जिक्र सुन उन्होंने मुझे गले लगा लिया।स्व उधास साहब की आज भी उनकी संजीदगी और सादगी साढ़े तीन दशकों के मेरे मानस में उनके स्मरण के सफ़र को जीवंत बनाएं हुए है ।

उनकी पुण्य तिथि पर भावपूर्ण विनम्र श्रद्धांजलि

डॉ सुरेंद्र मीणा

तकनीक के दुरुपयोग का फैलता दायरा

मानव सभ्यता ने तकनीक की सहायता से अभूतपूर्व प्रगति की है। संचार, शिक्षा, चिकित्सा, परिवहन और प्रशासन–हर क्षेत्र में तकनीकी विकास ने जीवन को आसान बनाया है। परन्तु जिस तकनीक ने दुनिया को जोड़ा है, उसी के दुरुपयोग ने अनेक नई चुनौतियों को जन्म दिया है। आज तकनीक का गलत उपयोग समाज, नैतिकता और मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डाल रहा है।

तकनीक: सुविधा से निर्भरता तक

स्मार्टफोन और इंटरनेट ने जानकारी को हमारी उंगलियों पर ला दिया है। लेकिन सुविधा धीरे-धीरे निर्भरता में बदल रही है। लोग आमने-सामने बातचीत के बजाय स्क्रीन पर अधिक समय बिताने लगे हैं। परिवार और समाज के बीच संवाद कम होता जा रहा है।

सोशल मीडिया और गलत सूचना

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे स्नड्डष्टड्ढश्वश्व, द्बठ्ठह्लह्लद्गह्लद्बद्ध और ह्लद्धद्बह्लह्लश्चश्च ने संवाद को आसान बनाया है, लेकिन इनके माध्यम से अफवाहें, फर्जी समाचार और भ्रामक सूचनाएँ तेज़ी से फैलती हैं। गलत सूचना सामाजिक तनाव, घबराहट और अविश्वास को जन्म दे सकती है।

बच्चों और युवाओं पर प्रभाव

तकनीक का अनियंत्रित उपयोग बच्चों और युवाओं के विकास को प्रभावित कर रहा है:

पढ़ाई में ध्यान की कमी
डिजिटल लत की समस्या
नींद की कमी
आक्रामक व्यवहार
सामाजिक अलगाव

ऑनलाइन गेमिंग और त्वरित मनोरंजन की आदत धैर्य और एकाग्रता को कमजोर कर रही है।

साइबर अपराध और डिजिटल धोखाधड़ी

तकनीक के दुरुपयोग का सबसे खतरनाक पहलू साइबर अपराध है। पहचान की चोरी, ऑनलाइन ठगी, बैंकिंग धोखाधड़ी, फर्जी कॉल और डेटा चोरी जैसी घटनाएँ तेजी से बढ़ रही हैं। अनजान लिंक पर क्लिक करना या निजी जानकारी साझा करना गंभीर नुकसान का कारण बन सकता है।

निजता पर खतरा

डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हमारी व्यक्तिगत जानकारी सुरक्षित नहीं रहती यदि सावधानी न बरती जाए। ऐप्स और वेबसाइटें उपयोगकर्ताओं का डेटा एकत्र करती हैं, जिसका दुरुपयोग किया जा सकता है।

मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

लगातार स्क्रीन उपयोग, तुलना की संस्कृति और ऑनलाइन मान्यता की चाह तनाव, चिंता और आत्मसम्मान में कमी का कारण बन रही है। आभासी दुनिया में स्वीकृति की तलाश वास्तविक जीवन के संतुलन को बिगाड़ सकती है।

समाधान: जिम्मेदार उपयोग की आवश्यकता

तकनीक समस्या नहीं है; उसका दुरुपयोग समस्या है। समाधान के लिए समाज, परिवार और संस्थाओं को मिलकर प्रयास करने होंगे:

डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना

बच्चों के स्क्रीन समय पर नियंत्रण

सोशल मीडिया पर जानकारी साझा करने से पहले सत्यापन

साइबर सुरक्षा जागरूकता

तकनीक से दूरी बनाकर वास्तविक गतिविधियों में भागीदारी

निष्कर्ष

तकनीक मानव प्रगति का शक्तिशाली साधन है, परन्तु इसका अनियंत्रित और अनुचित उपयोग सामाजिक संतुलन को बिगाड़ सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम तकनीक के स्वामी बनें, उसके गुलाम नहीं। विवेकपूर्ण और जिम्मेदार उपयोग ही तकनीक को मानव कल्याण का साधन बना सकता है।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

यादगार कहानी

साल 2023 दिसंबर महीने की 26 की वो सुबह मैं कैसे भूल सकती हूं। जब हम ने थियेटर बुक करके डंकी मूवी देखी थी। दर असल हुआ यूं था कि मैं उन दिनों लखनऊ गयी हुई थी । 'अटल सम्मान 'के लिए अपने पति और बेटे के साथ मुझे मंच की तरफ से बुलाया गया था। उन्हीं दिनों डंकी रीलीज हुई थी । मेरा बेटा शाहरुख खान जी का बहुत बड़ा फैन हैं। उस ने मूवी देखने की जिद पकड़ ली। हम ने उस से वादा किया था । सम्मान समारोह समाप्त होने के बाद हम डंकी मूवी देखने जंहर जाएंगे ।

मगर उस दिन 25 दिसंबर क्रिसमस होने की वजह से थियेटरों में काफी भीड़ थी और जिस वजह से शायद टिकट भी काफी महंगी कर दी गयी थी। हम टिकट काउंटर से वापस लौट आए । मेरा बेटा काफी उदास भी हो गया था। उसे लग रहा था शायद हम उसे बहला फुसला रहे हैं। हमारा उसे मूवी दिखाने का इरादा नहीं है।

जैसे तैसे उसे हम मना कर रात का डिनर ले जल्दी सो गये ?।अगली सुबह 9 बजे का पहला शो था । हम जल्दी जल्दी उठें नहा धोकर तैयार हो मूवी के लिए निकल गये ।?जहां हम ठहरे थे वहां से थियेटर पास ही था तो हम पांव पैदल ही चल पड़ें । वहां पहुच कर पता चला अभी तक एक भी टिकट नहीं बुक हुआ है। और पिछले दिन की अपेक्षा टिकट भी बहुत सस्ती हो गयी थी। हम टिकट काउंटर पे खड़े सोच रहे थे । अब अगर टिकट नहीं मिला तो हमारा बेटा फिर से नाराज़ हो जाएगा।। मगर फिर उन्होंने हमें तीन टिकट दे दिया । जब हम थियेटर के अंदर पहुंचे तो वहां कोई भी नहीं था । हमें लगा तीन जनों के लिए तो मूवी स्टार्ट नहीं करेंगे । मगर फिर दस मिनट बाद

सिर्फ तीन जनों के लिए मूवी स्टार्ट कर दी ।।मुझे थोड़ा डर भी लग रहा था । मगर साथ में पति और बेटा था इसलिए मूवी हम ने आराम से देख ली ।। मूवी शुरु होने के लगभग आधे घंटे बाद एक कपल आए तो हमें लगा चलो कोई तो आया । मगर फिर वो लोग दस मिनट बाद ही थियेटर से निकल गये ।। हम तीनों ने मूवी कम देखा और एक दूसरे की शक्ल ज्यादा क्योंकी बात बात पे हमें हंसी आ जाती थी । सुबह सुबह खाली थियेटर में मात्र हम तीन जन ही मूवी देख रहे थे । थियेटर क्या उस वक्त उस मल्टीप्लेक्स की सभी दुकानें तक बंद थी । वहां सफाई कर्मचारी को छोड़ कर और कोई भी नहीं था ।

मेरे बेटे को मूवी देखने में बहुत अच्छा लगा । मूवी भी काफी अच्छी थी । हमलोगों ने खूब इंज्वाय किया। हंसी मजाक करते हुए हम तीनों ने मूवी कम्प्लीट कर दी।।

मूवी समाप्त होने के बाद जब हम थियेटर से बाहर निकल रहे थे तब तक उस फ्लोर की दुकानें खुल चुकी थी और लोग भी आ जा रहे थे। कुछ लोग बाहर बैठे भी थे। जैसे ही हम थियेटर से बाहर निकले सभी लोग हमें देख कर हंस रहे थे। उन्हें हंसता हुआ देख कर हमारी भी हंसी छूट पड़ी । मैं तो हंसते हंसते लोट पोट हो रही थी । ये सोच कर की वो क्या सोच रहे होंगे..??

थियेटर में सिर्फ तीन जनों से ही मूवी देख ली या कुछ और मालूम नहीं ..!!

मैं तो शाल से अपना मूंह छुपा कर जल्दी जल्दी बाहर निकल रही थी। क्यों की मुझे बहुत हंसी आ रही थी। उसके कितने दिनों बाद तक भी जब भी हम एक दूसरे की आंखों में देखते हमें हंसी आ जाती और काफी दिनों तक हमारे बीच यही सिलसिला चलता रहा। हम खूब हंसते खूब हंसते ।।डंकी मूवी देखना हमारे लिए यादगार बन गयी।।

किरण काजल बेंगलुरु

श्रीमद्भगवद्गीता : आसुरी संपत्ति का विस्तार

आसुरी-सम्पत्ति का विस्तार पूर्वक वर्णन करने के लिये उसका उपक्रम करते हुए भगवान् कहते हैं कि इस लोक में प्राणि समुदाय दो तरह का है– दैव और आसुर। तात्पर्य यह है कि प्राणि मात्र में परमात्मा और प्रकृति– दोनों का अंश है। परमात्मा का अंश चेतन है और प्रकृति का अंश जड़ है। वह चेतन अंश जब परिवर्तनशील जड़-अंश के सम्मुख हो जाता है, तब उसमें आसुरी-सम्पत्ति आ जाती है और जब वह जड़ प्रकृति से विमुख होकर केवल परमात्मा के सम्मुख हो जाता है, तब उसमें दैवी-सम्पत्ति जाग्रत् हो जाती है।

'देव' नाम परमात्मा का है। परमात्मा की प्राप्ति के लिये जितने भी सदुण-सदाचार आदि साधन हैं, वे सब दैवी-सम्पदा हैं। जैसे भगवान् नित्य हैं, ऐसे ही उनकी साधन-सम्पत्ति भी नित्य है।

अकर्मण्यता के दोष याद रखो - जो वैराग्यवान् पुरुष हैं, उनको जगत् के किसी विषय में, किसी भी इस लोक या परलोक के भोग पदार्थ में आसक्ति नहीं है, न वे किसी पदार्थ की कामना करते हैं, परंतु अपने परमार्थ-साधन में वे अत्यन्त तत्पर रहते हैं। संसार में जब तक रग रहता है, तब तक परमार्थ में पूरी प्रवृत्ति नहीं होती। संसार की आसक्ति बार-बार मन को खींचकर भोगों की ओर ले जाती है; परंतु जब संसारासक्ति छूटकर विराग प्राप्त हो जाता है, तब तो पूर्णतया परमार्थ-साधन में सलंग्नता हो जाती है। ऐसी स्थिति में अकर्मण्यता कैसे रह सकती है? आपका हर दिन शुभ मंगलमय हो ऐसी कामनाएं। जय श्री कृष्ण, राधे - राधे, ओउम नमो भगवते वासुदेवाय।

सुश्री जशोदा मोनिका गर्ग ऋश्नः व्याख्याता स्कूल शिक्षा विभाग राजस्थान सरकार, जोधपुर और स्वतंत्र लेखिका

महामुनि महर्षि श्री गर्गाचार्य ऋषि : किस रोग में कौन सा आसन करें

पेट की बिमारियों में- उत्तानपादासन, पवनमुक्तासन, वज्रासन, योगमुद्रासन, भुजंगासन, मत्स्यासन।सिर दर्द की बिमारियों में- सर्वांगासन, शीर्षासन, चन्द्रासन।मधुमेह- पश्चिमोत्तानासन, नौकासन, वज्रासन, भुजंगासन, हलासन, शीर्षासन।वीर्यदोष- सर्वांगासन, वज्रासन, योगमुद्रा।गला- सुप्तवज्रासन, भुजंगासन, चन्द्रासन।आंखें- सर्वांगासन, शीर्षासन, भुजंगासन।गठिया- पवनमुक्तासन, पद्मासन, सुप्तवज्रासन, मत्स्यासन, उष्ट्रासन।नाभि- धनुरासन, नाभि-आसन, भुजंगासन।गर्भाशय- उत्तानपादासन, भुजंगासन, सर्वांगासन, ताड़ासन, चन्द्रानमस्कारासन।कमर दर्द - हलासन, चक्रासन, धनुरासन, भुजंगासन।केफड़े- वज्रासन, मत्स्यासन, सर्वांगासन।यकृत- लतासन, पवनमुक्तासन, यानासन।गुदा,बवासीर,भंगदर आदि में- उत्तानपादासन, सर्वांगासन, जानुशिरासन, यानासन।दमा- सुप्तवज्रासन, मत्स्यासन, भुजंगासन।गैस- पवनमुक्तासन, जानुशिरासन, योगमुद्रा, वज्रासन।जुकाम- सर्वांगासन, हलासन, शीर्षासन।मानसिक शांति के लिए- सिद्धासन, योगासन, शतुरमुर्गासन, खगासन योगमुद्रासन।रीढ़ की हड्डी के लिए- सर्पासन, पवनमुक्तासन, सर्वांगासन, शतुरमुर्गासन करें।गठिया के लिए- पवनमुक्तासन, साइकिल संचालन, ताड़ासन किया करें।गुर्दे की बीमारी में- सर्वांगासन, हलासन, वज्रासन, पवनमुक्तासन करें।गले के लिए- सर्पासन, सर्वांगासन, हलासन, योगमुद्रा करें।हृदय रोग के लिए- शवासन, साइकिल संचालन, सिद्धासन किया करें।दमा के लिए- सुप्तवज्रासन, सर्पासन, सर्वांगासन, पवनतुक्तासन, उष्ट्रासन करें।रक्तचाप के लिए- योगमुद्रासन, सिद्धासन, शवासन, शक्तिसंचालन क्रिया करें।सिर दर्द के लिए- सर्वांगासन, सर्पासन, वज्रासन, धनुरासन, शतुरमुर्गासन करें।पाचन शक्ति बढ़ाने के लिए- यानासन, नाभि आसन, सर्वांगासन, वज्रासन करें।मधुमेह के लिए- मत्स्यासन, सुप्तवज्रासन, योगमुद्रासन, हलासन, सर्वांगासन उत्तानपादासन करें।मोटापा घटाने के लिए- पवनमुक्तासन, सर्वांगासन, सर्पासन, वज्रासन, नाभि आसन करें।आंखों के लिए- सर्वांगासन, सर्पासन, वज्रासन, धनुरासन, चक्रासन करें।बालों के लिए- सर्वांगासन, सर्पासन, शतुरमुर्गासन, वज्रासन करें।प्लीहा के लिए- सर्वांगासन, हलासन, नाभि आसन, यानासन करें।कमर के लिए- सर्पासन, पवनमुक्तासन, सर्वांगासन, वज्रासन, योगमुद्रासन करें।कद बड़ा करने के लिए- ताड़ासन, शक्ति संचालन, धनुरासन, चक्रासन, नाभि आसन करें।कानों के लिए- सर्वांगासन, सर्पासन, धनुरासन, चक्रासन करें।

नींद के लिए- सर्वांगासन, सर्पासन, सुप्तवज्रासन, योगमुद्रासन, नाभि आसन करें। आपका हर दिन शुभ मंगलमय हो ऐसी कामनाएं।

- श्रीमती दिव्या रावत गर्ग उण्डू
श्री हरि विष्णु कृपा, श्री गर्गवास राजबेरा, राजस्थान

ट्राइडेंट ग्रुप ने 'विकसित भारत मिशन' के तहत देशव्यापी भर्ती अभियान शुरू किया

नई दिल्ली, : भारत के प्रमुख औद्योगिक समूहों में से एक, ट्राइडेंट ग्रुप की मुख्य कंपनी ट्राइडेंट लिमिटेड ने एक बड़े भर्ती अभियान की घोषणा की है। कंपनी अपने मैन्युफैक्चरिंग ऑपरेशन्स के लिए 3,000 से अधिक 'कर्मयोगियों' की नियुक्ति करेगी। यह पहल टेक्सटाइल मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में स्किल डेवलपमेंट को बढ़ावा देने और देश में रोजगार के नए अवसर पैदा करने के राष्ट्रीय लक्ष्य का हिस्सा है।

इस घोषणा पर टिप्पणी करते हुए ट्राइडेंट ग्रुप की ग्रुप सीएचआरओ, पूजा बी. लूथरा ने कहा, 'ट्राइडेंट में हमारा यह मानना है कि भारत के औद्योगिक विकास की असली ताकत हमारी प्रतिभाएं हैं। इस भर्ती अभियान के ज़रिए हम न केवल अपने कार्यबल को मजबूत बना रहे हैं, बल्कि भविष्य के लिए तैयार एक मजबूत मैन्युफैक्चरिंग ट्रांसफॉर्मेशन के जरिये राष्ट्रीय लक्ष्य का समर्थन भी कर रहे हैं। व्यावसायिक विस्तार से परे, हमारा ध्यान बेहतर करियर बनाने, समुदायों को मजबूत करने और भारत को ग्लोबल मैन्युफैक्चरिंग के क्षेत्र में अग्रणी बनाने पर केंद्रित है।'

इस पहल के तहत ऑपरेटर, बुनकर, सिलाईकर्मी, फिटर, इलेक्ट्रीशियन और मल्टीपल टेक्निकल व ऑपरेशनल पदों के लिए आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। उम्मीदवारों का चयन उनकी शैक्षणिक योग्यता और संबंधित उद्योग अनुभव के आधार पर होगा। ट्राइडेंट ने अनुभव और हुनर को सम्मान देने के लिए एक विशेष वेतन प्रारुप तैयार किया है। 2-3 वर्ष तक के अनुभव वाले प्रोफेशनल्स को ₹25,000 प्रति माह, 3 से 5 वर्ष के अनुभव वाले उम्मीदवारों को ₹36,000 प्रति माह और 5 से 7 वर्ष के अनुभव वाले विशेषज्ञों को ₹50,000 प्रति माह का वेतन दिया जाएगा।

शानदार सैलरी के साथ ही, चुने गए उम्मीदवारों को परफॉर्मेंस के आधार पर इंसेंटिव, बोनस और वेरिएबल पे जैसे आर्थिक लाभ भी दिए जाएंगे। कर्मचारियों की सुरक्षा और सुविधा का ध्यान रखते हुए कंपनी प्रोविडेंट फण्ड (PF) और ईएसआई (ESI) कवरेज, मेडिकल सहायता, निःशुल्क छात्रावास और सब्सिडी वाला भोजन भी उपलब्ध कराएगी। इसके साथ ही, विशेष ट्रेनिंग प्रोग्राम, जिम और खेल सुविधाओं के माध्यम से उनके समूचे विकास पर जोर दिया जाएगा। इस पहल के जरिए ट्राइडेंट अपने 'मानव संसाधन' को मजबूत बना रहा है और अपने कर्मचारियों को वित्तीय सुरक्षा के साथ-साथ करियर में आगे बढ़ने के बेहतरीन अवसर देने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

शादी में आतिशबाजी

' शादियों का सीजन हैं

खूब ढ़ोल धमाका – छठ्ठ साउंड

महिला संगीत में घूमर –

वेस्टर्न गानोंके साथ सपना चौधरी के गानों पर

खूब गाना – बजाना.....

बारात का स्वागत – खूब आवभगत

बारात में दोस्तों का नाच – गाना

सब समझ आता हैं

खुशियों के मौक़े पर यह सब स्वाभाविक भी हैं

होना भी चाहिए ..

वैसे भी कौनसी रोज रोज हो रही हैं दोस्त की शादी

यहीं सब होता हैं

एक दोस्त में जहन में अपने प्यारे दोस्त की शादी को लेकर...

बस

एक बात समझ नहीं आती

बारात के आगे आगे चलने वाले दोस्त

सड़क के बीचों बीच बड़े पटाखों की लंबी सी लड़ी,रस्सी बम, अनार जलाकर राहगीरों के मानस में अजीबोगरीब भय पैदा कर देते हैं।

रास्ते में चलने वाले बुजुर्ग,बच्चें,महिलाएँ,दोपहिया, चारपहिया वाहन चालक सड़क के बीचोंबीच ये सब नज़ारा देख सहम जाते हैं।

कल की ही बात लीजिए

ऐसे ही दृश्य में राह चलती एक महिला की साड़ी पटाखों से निकली चिंगारियों के कारण झुलस गई।

छोड़ा गया रॉकेट सड़क किनारे लगी चाय की गुमटी में लगे गैस सिलेंडर पर जाकर गिरा।

एक बुजुर्ग चलती साईकल से गिर गए।

मेरी तरह आपने भी यह सब कई कई बार देखा ही होगा?

शादी में यह सब होता हैं,कौन किसे बोलें ?

पर जो परेशान और त्रस्त होते हैं

छठ्ठ के कानफाड़ू शोर में दफ़न होता हैं उनका दर्द

डॉ सुरेन्द्र मीणा, नागदा